इकाई 2 मरुत्–इन्द्र

इकाई की रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय का सामान्य परिचय

2.4 मरुतों का परिचय

2.5 इन्द्र का परिचय

2.6 इन्द्र, मरुत, विष्णु, सूर्य आदि का आपसी सम्बन्ध

2.7 मरुत व इन्द्र की विभूतियाँ तथा उनसे सीख

2.8 सारांश

2.9 पारिभाषिक शब्दावली

2.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

2.11 बोध प्रश्न

2.1 उद्देश्य

देवराज इन्द्र अदिति के 12 पुत्रों (आदित्यों में एक हैं।) श्रीकृष्ण ने गीता के 10वें अध्याय के श्लोक 22 में अर्जुन को कहा है, ''देवाना मस्थि वासव!'' मैं देवताओं में वासव अर्थात् इन्द्र हूँ ये सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, वरुण, कुबेर आदि सभी वैदिक देवताओं के नायक (राजा) हैं। श्रीकृष्ण ने इन्द्र को अपनी विभूति कहा है। देवराज इन्द्र की विभूतियों का अध्ययन करना आवश्यक है।

गीता के श्लोक 21 अध्याय 10 में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा है, ''**मरीचिर्मरुतोस्मि**।'' अर्थात् 49 मरुतों में मरीचि मेरी विभूति है। 49 मरुतों की विभूतियों का अध्ययन करना आवश्यक है।

इस इकाई के अध्ययन के निम्नलिखितउद्देश्य है :–

1. नेता/देवताओं का राजा बनने के लिए इन्द्र की कौन सी विभूतियाँ (गुण सहायक हुए? उन गुणों को अपनाकर आप अच्छे नेता/शासक बन सकते हैं।
2. देवराज इन्द्र के कौन से अवगुण थे जिनसे इनकी राज्य सत्ता कभी स्थिर नहीं रही? उन दोषों से आपको बचना होगा?
3. 49 मरुतों का जन्म कैसे हुआ?
4. मरुतों के किन गुणों से वे अपने को मारने आने वाले इन्द्र के सहयोगी बन गये? मरुतों का भी राजा इन्द्र को ही महर्षि कश्यप ने किन गुणों से विमुक्त कर दिया।
5. देवराज इन्द्र तथा मरुत राज इन्द्र के बारे में पौराणिक कथानकों से आप क्या सीख सकते हैं?
6. मरुतों के तथा इन्द्र के गुण–दोषों से आप क्या शिक्षा लेते हैं? रस ज्ञान की आपके जीवन में क्या उपयोगिता होगी?

2.2 प्रस्तावना

इन्द्र तथा मरुतों का वैज्ञानिक अध्ययन भूगोल के अन्तर्गत वर्षा तथा वायु के सम्बन्ध में किया जायेगा। इनके पौराणिक कथानकों का भी हम वर्णन करेंगे। रामायण तथा महाभारत में भी इनके कथानकों का वर्णन मिलता है। इन्द्र के परिवार का वर्णन भी हम प्रस्तुत करेंगे। इन्द्र की पूजा, मरुतों की पूजा तथा इनके मन्दिरों की जानकारी भी कराई जायेगी। इन्द्र वर्षा के देवता हैं। मानसून तथा 49 मरुतों का सम्बन्ध है। वर्षा ऋतु का निर्माण इसी से होता है। वस्तु पौराणिक कथानकों में इन्द्र के चरित्र की दुर्बलता, सत्ता की अस्थिरता का भय, विषय भोग में रूचि, श्रीराम तथा श्रीकृष्ण से प्रदर्श संघर्ष आदि का वर्णन मिलता है। ये इन्द्र के दोष हैं। इन सबके बावजूद भी उनको देवताओं का राजा बनाया गया। महाभारत में अर्जुन, इन्द्र के पुत्र थे। श्रीकृष्ण ने अर्जुन की रक्षा करने के लिए सूर्य पुत्र कर्ण का मनोबल गिराने की रणनीति बनाई थी। प्रत्येक पौराणिक कथा से आप क्या शिक्षा ले सकते हैं इसे भी रेखांकित किया जायेगा। ये सब प्रकरण दण्डनीति व कूटनीति के छात्रों के लिए विशेष महत्त्व के होंगे। ये हमारी प्राचीन ज्ञान परम्परा का समृद्ध खजाना है जिसकी आज भी प्रासंगिकता है। पुराणों में मतभेद को भी रेखांकित करेंगे। कल्पभेद के कारण स्थलों में विरोधाभास मिलना आवश्यक है। वेदों तक पुराणों के वर्णनों में भी अन्तर मिलता है। एक विद्वान ने भक्तों का सम्बन्ध प्राणों, कोणों तथा वाणी के शब्दों से भी जोड़ा है।

2.4 मरुतों का परिचय

मरुतों के जन्म की कथा विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय 21 में निम्नलिखित प्रकार से वर्णित है :

''महर्षि कश्यप'' की पत्नी दिति अपने पुत्र दानवों के नाश से दुःखी थी। उसने पति की बहुत सेवा की। महर्षि ने इन्द्र का वध करने योग्य तेजस्वी पुत्र होने का वरदान देकर दिति को प्रसन्न किया। उन्होंने गर्भ की रक्षा करने के लिए निम्नलिखितसावधानियाँ बरतने को कहा :–

1. भगवान का ध्यान कीजिए पवित्रता, शौच व संयम सहित।

शौच के नियमों का वर्णन मत्स्य पुराण में आता है जो निम्नलिखित प्रकार से है :–

हे सुन्दरी! गर्भिणी स्त्री को निम्नलिखित शौच के नियमों का पालन करना चाहिए :–

- संध्या काल में भोजन न करें।
- वृक्षो के नीचे न जाओ तथा वहाँ न ठहरे।
- किसी के साथ कलह न कीजिए।
- अंगडाई न लो।
- बाल खुने न रखो।
- शरीर अपवित्र न रखो।

जब देवराज इन्द्र को यह पता लगा कि दिति के गर्भ में उसका काल है तो वे दिति की सेवा में आकर रहने लगे। उनका तो उद्देश्य दिति द्वारा गर्भिणि के शौच के नियम को भंग करने की प्रतीक्षा करना था। एक दिन दिति ने पांव धोये बिना ही शय्या पर शयन किया। उसे नींद आ गयी। इन्द्र को मौका मिल गया। दिति की

कोख में जाकर इन्द्र ने अपने वज्र से गर्भ पर प्रहार किया। गर्भ सात टुकड़ों में बँट गया परन्तु जीवित रहा। पुनः इन्द्र ने प्रहार करके प्रत्येक टुकड़े के 7 टुकड़े कर दिये। इन्द्र ने उनको रोते देख कर उनसे कहा 'मा रोछीः।' इससे उनका नाम मरुत हुआ। इस प्रकार 49 मरुत हुए। इन्द्र ने इनका बल व तेज देखकर उनको अपना सहायक बना लिया।''

49 मरुतों के जन्म के प्रकरण से आधुनिक गर्भिणी स्त्रियाँ गर्भ रक्षा के लिए क्या सावधानियाँ रखना आवश्यक है। यह जान सकती हैं। इनके पालन से गर्भ नष्ट नहीं होगा।

शत्रु भी बलवान हो तो शत्रु से समझौता कर लेने की भी सीख मिलती है। शत्रु विजय के लिए अपने बल व तेज को बटने मत दो।

49 मरुतों के नाम निम्नलिखितहैं :– सत्त्व ज्योति, आदित्य, सत्य ज्योति, तिर्यज्जयोति, सज्योति, ज्योतिष्मान, हरित, ऋतजित, सत्यजित, सुषेण, सेनजित, सत्यजित, अभिमित्र, हरिमित्र, कृत, सत्य, ध्रुव, कर्ता, विधर्ता, ध्वान्त, धुनि, उग्र, भीम, अमियु, साक्षिप, ईदृक, अन्यादृक, यादृक, प्रतिकृत, ऋत, समिति, सरम्य, ईदृक्ष, पुरुष, अव्यादृक्ष, चेतस, समिता, रूमिदृक्ष, प्रतिदक्ष, मरूति, सरत, देव, दिश, यजुः, अनुदृक, साम, मानुष, विश्।

(वायु पुराण 67, 123–130)

इनमें मरूति नाम आया है, मरीचि नहीं। महर्षि मरीचि तो 49 मरुतों के दादा तथा महर्षि कश्यप के पिता थे। अतः श्रीकृष्ण मारूतों में किसे अपनी विभूति बतलाते हैं यह प्रश्न चिन्ह बिना उत्तर के रह जाता है। हाँ मरीचि का आशय तेज से भी है। महर्षि कश्यप का तेज भी मरुतों को मिला था। साथ ही माता दिति के गर्भावस्था में भी भगवान् का ध्यान किया था। अतः भगवान का तेज भी उनको मिला। यह तेज इतना प्रबल था कि इन्द्र के वज्र का दो बार प्रहार हुआ तो भी 49 मरुत जीवित रहे। गीता की टीकाओं में मरिचि का अर्थ इस तेज से ही लगाया गया है।

इन्द्र के सहायक 49 मरुत प्रचंड वायु के रूप हैं। भागवत महापुराण 10वें स्कन्ध में इन्द्र ने जब कोप किया तो 49 मरुतों को भी वज्र पर घनघोर वर्षा करने में सहायक होने को कहा। पूरे 7 दिन विनाशकारी वर्षा हुई परन्तु श्रीकृष्ण ने गिरिराज धारण करके व्रज की रक्षा की। सारा वर्षा जल सुदर्शन चक्र ने फैला दिया तथा महर्षि कुंभज (आगस्त्य) ने सारा पानी पी लिया।

हनुमान वायु पुत्र है। उनके पिता वानर राज मारूति थे। अतः हनुमान को मारूति नन्दन भी कहते हैं। लंका दहन के समय 49 मरुतों ने लंका जलाने में सहयोग दिया था अग्नि को तेज जलाकर तथा फैला कर। तुलसी दास ने रामचरितमानस के सुन्दर कांड में लिखा है7

हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास। (सु0का0 25)

महाभारत में वायु अवतार भीम थे। 49 मरुतों में उनका भी नाम आया है। महाभारत युद्ध में दुर्योधन तथा उसके भाइयों का नाश भीम ने ही किया था। भीम का परम बलशाली पुत्र घटोत्कच्छ था तथा परम बली पोता वब्रूवाहन था जो कलियुग में श्याम प्रभु के नाम से पूजा जाता है। खाटू (राजस्थान) में उनका मुख्य मन्दिर है।

इस प्रकार पौराणिक परिचय मरुतों का निम्नलिखित है :–

1. मरुत प्रचंड वायु के रूप हैं जो शक्ति व तेज से सम्पन्न हैं। इनकी संख्या 49 है।
2. ये कश्यप – दिति के पुत्र हैं।
3. ये देवराज इन्द्र के सहायक हैं।
4. इनमें मरीचि (तेज) श्रीकृष्ण की विभूति है।

वेदों में मरुत का वर्णन भिन्न मिलता है। वेदों में तूफानी देवता हैं तो क्रोध रूप है। ये रुद्र तथा पृश्नि के पुत्र हैं। इनकी संख्या 27 से 60 तक बताई गई है। (ऋग्वेद 8.96.8) परन्तु वेद का यह वर्णन गीता में कहीं नहीं है। गीता के तथा पुराणों के अनुसार ही उत्तर मान्य है।

योगीराज लहरी महाशय ने मरुतों का वर्णन विज्ञान (शरीर विज्ञान या भाषा विज्ञान) के रूप में किया है। उनके अनुसार मरुत 7 वर्गों में बांटे जाते हैं। क्रिया योग के अनुसार आकाश शब्द का स्त्रोत है। वायु स्पर्श व शब्द का स्त्रोत है। अग्नि, शब्द, स्पर्श व रूप का स्रोत है। वरुण/जल, रस, रूप, स्पर्श व शब्द का स्रोत है। पृथ्वी गंध, रूप, रस, स्पर्श व शब्द का स्रोत है। ये सब विशिष्ठस्पन्दन उत्पन्न करते हैं। ओम में इन सबका संयुक्त स्पन्दन होता है जो सूक्ष्म प्राण शक्ति है। ओम जब हमारे शरीर में प्रवेश करता है तब प्राण शक्ति के रूप में प्रकट होता है। यह प्राण, अपान, व्यान, उड़ान, समान कार्यानुसार कहलाता है। यह जीवनी शक्ति 50 प्रकार के प्राणों में उप–वायु (मरुत) के रूप में बँट जाती है। ये संस्कृत भाषा के 50 अक्षरों (।सचींइमजे) का आधार है। सम्बन्धित अक्षरों का उच्चारण करने से प्रत्येक चक्र की उप–वायु से उत्पन्न नकारात्मक ऊर्जा हट जाती है। जैसे मोबाइल को चार्ज करने पर उसके सेल सक्रिय हो जाते हैं वैसे ही सम्बन्धित शब्दों के उच्चारण से हमारे शरीर की बेटरी/सेल सक्रिय होते हैं। आशा चक्र द्विभागी होता है– सकारात्मक व नकारात्मक ऊजा। शेष चक्र एक भागी होते हैं। इसी कारण आज्ञा चक्र के दो अक्षर हैं तथा 'क्ष।' दोनों सिरों को मिलाकर आज्ञा चक्र कहते हैं। ये उसकी दो पंखुड़ियाँ हैं। 'ह'' नकारात्मक (मंडुला) या मज्जा केन्द्र है। इसके गुण ब्रह्माण्ड चेतना सृजन कार्य में प्रवेश करती है। 'क्ष'' अक्षर सकारात्मक सिरा है जिसके माध्यम से चेतना सहस्त्रार चक्र तक पहुँचती है जो संग्रहालय है। इसी कारण से ओम को मुख्य प्राण शक्ति कहते हैं। संस्कृत के 'अक्षर' शब्द का समानार्थी शब्द अंग्रेजी में नहीं मिलता है।

चन्द्र	**शब्द संख्या**		
1. मूलाधार	4	4. अनाहत	12
2. स्वाधिष्ठान	6	5. विशुद्ध	16
3. मणिपूर	10	7. आज्ञा चक्र 02	
		कुल	50

ओम सहित शब्द संख्या 51 होती है। चक्र को सक्रिय करने की क्रिया एक उदाहरण से आप समझ सकते हैं :–

मूलाधार चक्र के चार शब्द हैं व श ष स केन्द्र शब्द हैं लं. अतः लं. का उच्चारण चार बार करें तथा व श श स का उच्चारण भी चार बार करें।

मुख्य शब्द ओम में चेतना व ऊर्जा दोनों होते हैं। यह भृकुटी मध्य से सहस्त्रार में प्रवेश करती है वहाँ संग्रह होकर ऊर्जा मेडुला द्वारा सभी चक्रों को वितरित होती हैं। प्रत्येक उप–वायु का एक निर्धारित कार्य होता है। प्रत्येक चक्र के केन्द्र में ऊर्जा उसे नाड़ी केन्द्र में जाकर विभिन्न अंगों को पुनः वितरित होती है।

जिस साधक ने माया रूपी निद्रा पर विजय पा ली है (वह मोह त्रिदा से जग गया है। वही जानता है कि सभी जड़–चेतन की ऊर्जा–चेतना का ही रूप है।

महेश्वर सूत्र के अनुसार उप–वायु की शक्ति से ही हलन्त तथा दीर्घ तथा संयुक्त या मिश्रित (टवूमसे ंदक ब्वदेवदमदजे) का निर्माण होता है। इस प्रकार 49 उप–वायु (मरुत) का स्त्रोत सूक्ष्म जीवनी शक्ति है।

हमारे शरीर का शक्ति व स्पंदन वितरण निम्नलिखित तालिका का ध्यान से पढ़कर आप समझे :

स्पंदन तत्व	प्राण	नियंत्रक देवता	कार्य	स्थान
आधा आकाश	प्राण	वशिष्ट	क्रिस्टालाइजेशन	हृदय
आधा वायु	अपान	विश्वकर्मा	नष्टकरण	गुदा
आधा अग्नि	व्यान	विश्वयोनि	परिभ्रमण	संपूर्ण शरीर
आधा जल	उदान	अज	पाचनतंत्र	गुलेट
आधी पृथ्वी	समान	जय	अवशोषण	नाभि
उपवायु (मरुत)	उप–वायु	उप वायु	उप–वायु	उप–वायु
	नाग		डकार लेना	अन्य बली
	कूर्म		आंखों का चलन	नेत्र
	देवदत्त		उबासी	मुंह
	धनंजय		मृत शरीर में दस मिनट ताप	पूरा शरीर

ब्रह्माण्ड, मन तथा शरीर के बीच इस प्रकार सह सम्बन्ध है। (अधिक ज्ञान हेतु लिंग http/kriyayogaan.blog.spot.com)

महाभारत में मरुत का वर्णन रुद्र रूप में वेदानुसार ही है। रुद्र पत्नी देवी रोड़सी मरुतों के साथ मिलकर आकाश विद्युत बनाती है। बादल मरुत के रथ हैं। रोड़सी का स्वर्ग के अर्थ में भी वर्णन मिलता है। रोड़सी मरुतों की पत्नी भी है। मरुतों के स्वामी इन्द्र हैं। बादल के निर्माण तथा वितरण में इनका योग रहता है।

2.5 इन्द्र का परिचय

देवताओं के राजा इन्द्र हैं। सभी वैदिक देवता–यथा सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वरुण, वायु, यम, कुबेर आदि के राजा इन्द्र हैं। गीता के अनुसार देवताओं में इन्द्र श्रीकृष्ण की विभूति हैं। गीता के अनुसार देवताओं में इन्द्र श्रीकृष्ण की विभूति है। इन्द्र वर्षा का देवता है। वर्षा उप–वायु (मरुतों) की सहायता के बिना नहीं होती। अतः वायु पुराण के अनुसार महर्षि कश्यप ने इन्द्र को मरुतों का राजा नियुक्त किया।

इन्द्र के अनेक नाम हैं। कुछ प्रमुख काम निम्नलिखित हैं :–

यज्ज, विपरिचत, शिदि, विधु, मनोजव, पुरंदर, बली, अद्भुत, विश, अमरेश, देवेश, देवराज, देवेन्द्र, सूरेम, वासव, शचिपति, शक्र, महेन्द्र।

आर्य इन्द्र को राष्ट्र का देवता मानते हैं। इन्द्र ऋग्वेद का महत्त्वपूर्ण एवं लोकप्रिय देवता है।

जैन धर्म में इन्द्र तथा इन्द्राणी को पुण्मात्मा मानव मानते हैं, देव नहीं। उनको प्रत्येक धार्मिक कार्य/महोत्सव में बुलाते हैं। बुद्ध धर्म में इन्द्र का पुनर्जन्म माना गया है। अतः उसाक पद निम्नलिखित है, निर्वाण का नहीं।

इन्द्र के पिता महर्षि कश्यप तथा माता अदिति हैं। यह 12 आदित्य देवताओं में शामिल है। अतः अदिति के शेष 11 पुत्र इन्द्र के सगे भाई हैं। उनके नाम हैं – द्याता, मित्र, अर्यमा, वरुण, अंश, भग, विवस्वान, पूसा, सदिता, त्वष्टा तथा विष्णु।

इन्द्र की पत्नी का नाम शचि है। इन्द्र के पुत्र का नाम जयन्त है। इन्द्र का वाहन ऐरावत हाथी है। इन्द्र के गुरु देवगुरु बृहस्पति हैं।

इन्द्र की पत्नी महाराणी शची के अन्य नाम हैं– इन्द्राणी, महेन्द्री, पुलोमजा, पौलोमी।

देवराज इन्द्र की देवलोक में राजधानी है इसका नाम अमरावती है। वहाँ के बाग में पारिजात वृक्ष हैं। जिनके फूलों की सुगंध देवलोक में फैली रहती है। इनकी देव सभा बहुत वैभवशाली है। वे रंभा, उर्वशी आदि अप्सराओं के नृत्य तथा गन्धर्वोंके संगीत का आनन्द लेते रहते हैं।

इन्द्र दानवों के साथ युद्ध में उलझे रहते हैं। धरती से कई सूर्यवंशी राजा (मुचकुंद, मान्धाता, दशरथ आदि) भी देवासुर संग्राम में इन्द्र की सहायता करने जाते थे। इन्द्र को अपना सिंहासन कोई अन्य छीन लेगा यह भय सदा सताता रहता है। अतः इन्द्र का राज्य अस्थिर है। वह तपस्या भंग करने के लिए अप्सराओं व कामदेव को भेजता है।

पौराणिक आख्यानों में इन्द्र के कई चारित्रित दोष बताये गये हैं। उन दोषों से आप बच कर रहें। कुछ चुने हुए पौराणिक आख्यान यहाँ प्रस्तुत हैं।

इन्द्र श्रीहीन हुआ

विष्णुपुराण अंश प्रथम के अध्याय 9 में इन्द्र के पराजित होने व दरिद्र होने की कथा है महर्षि दुर्वासा के श्राप से। एक बार शंकर के अवतार महर्षि दुर्वासा पृथ्वी पर भ्रमण कर रहे थे। उन्हांने एक विद्याधरी के हाथ में संतानक पुष्पों की एक दिव्य माला देखी। उसकी गंध पूरे वन में फैल रही थी। महर्षि ने वह माला विद्याधरी से मांगी। उसने प्रणाम करके माला उनको आदरपूर्वक दे दी। वह माला दुर्वासा जी ने गले में धारण कर ली। उसी समय ऐरावत पर बैठा हुआ देवराज इन्द्र देवताओं के साथ आता हुआ दिखा। महर्षि दुर्वासा ने यह माला इन्द्र पर डाल दी। हाथी ने उस माला को सूंघ कर धरती पर पटक कर अपने पांव तले रोंध दी। महर्षि दुर्वासा को यह देख कर क्रोध आ गया। उन्होंने इन्द्र को कहा, "इन्द्र! तू बड़ा दीठ है। तूने मेरी प्रसाद माला का कुछ भी आदर नहीं किया। प्रणाम करके यह भी नहीं कहा कि आपने बड़ी कृपा की। न प्रसन्न वदन हो उसे अपने सिर पर ही रखा। मेरी माला का कुछ आदर न करने तुमने मेरा अपमान किया। तूने मेरी माला को पृथ्वी पर फैंका है इसलिए तेरा

त्रिभुवन भी शीघ्र ही श्रीहीन हो जायेगा। तूने गर्व से मेरा अपमान किया है।''

इन्द्र हाथी से नीचे उतरा तथा महर्षि दुर्वासा से क्षमा याचना कर प्रसन्न किया। महर्षि इन्द्र को बोले, ''मेरे अन्तःकरण में क्षमा का कोई स्थान नहीं है। महर्षि गौतम तथा वशिष्ठआदि ने तुम्हें बहुत अहंकारी कर दिया है तेरी बड़ी स्तुति कर कर के। इससे तूने आज मेरा अपमान कर दिया है। मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता।''

इन्द्र अमरावती पुरी को लौट गया तथा महर्षि दुर्वासा आगे चले गये। महर्षि दुर्वासा के श्राप से त्रिलोकी श्री होन होने लगी। वृक्षादि सूखने लगे। यज्ञादि बंद हो गये। तपस्वियों ने तप करना बंद कर दिया। लोभ बढ़ने से सत्त्व नष्ट हो गया। लोगों में दान करना बंद कर दिया। लोभ–लालच बढ़ गया। जहाँ सत्त्व होता है वहीं लक्ष्मी रहती है। विद्या सत्त्व के अन्य कोई सद्गुण नहीं रहता। श्रीहीनों में सत्त्व भी नहीं रहते। ऐसे निर्बल व्यक्ति का सभी अपमान करते हैं। इससे प्रतिष्ठित व्यक्ति की बुद्धि बिगड़ जाती हैं। ऐसे सत्त्वहीन व श्रीहीन त्रिलोकी पर दैत्यों ने आक्रमण करके देवताओं को हरा दिया।

इस आख्यान से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

(संकेत : ऐश्वर्य व सत्ता वाले व्यक्ति में इनका मद नहीं होना चाहिए। चापलूसी से दूर रहना चाहिए। ऋषि मुनियों का प्रसाद माला का सम्मान कर कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार करना चाहिए। यह सदा याद रखना चाहिए कि सत्त्व तथा सद्गुण हों वहीं श्री लक्ष्मी होती है। सद्गुणों में ही बल व वीरता होती है जिससे राज्य लक्ष्मी की रक्षा होती है।

इन्द्र को पुनः ऐश्वर्य की प्राप्ति

ब्रह्मा जी ने भगवान विष्णु को प्रार्थना करके प्रसन्न किया। भगवान श्री हरि प्रकट हुए। उन्होंने कहा, ''मैं देवताओं के तेज को पुनः बढ़ाऊँगा। तुम दैत्यों से संधि करके क्षीर सागर का मंथन कीजिए। समुद्र मंथन करके अमृत प्राप्त कीजिए। मैं राजनीति पूर्वक दैत्यों को अमृत पान नहीं करने दूंगा।'' देवताओं ने दैत्यों के साथ संधि करके समुद्र मंथन किया। देवों ने अमृत पान कर शक्ति पुनः प्राप्त की। लक्ष्मी जब क्षीर समुद्र मंथन से प्रकट हुई तो इन्द्र ने उनकी स्तुति की। लक्ष्मी ने इन्द्र को पुनः विजय श्री का आशीर्वाद दिया। दैत्यों ने आक्रमण किया तो देवता विजयी हुए। इन्द्र पुनः देवराज बन गये।

इस आख्यान से आपको क्या सीख मिलती है?

(**संकेत** : आवश्यकता पड़ने पर शत्रु के साथ संधि करके पुनः संयुक्त उद्यम या पुरूषार्थ कीजिए। लक्ष्मी जी की स्तुति करके आशीर्वाद लो। शक्ति प्राप्त कर संघर्ष करके पुनः सत्ता प्राप्त करने की रणनीति बनाओ। विजयी बनकर पुनः राज्य भी प्राप्त कीजिए।)

परस्त्री गामी इन्द्र को महर्षि गौतम का शाप

महर्षि गौतम की धर्मपत्नी सती अहिल्या थी। वह परम सुन्दरी थी। इन्द्र उस पर आसक्त हो गया। ब्रह्ममुहुर्त का जल्दी ही आभास करा कर जमा दिया। वे गंगा स्नान करने चले गये। पीछे से इन्द्र महर्षि का वेष बनाकर अहिल्या के पास जा सो गया। महर्षि स्नान कर लौटे तब इन्द्र के व्याभिचार पूर्ण आचरण का उनको पता चल गया। उन्होंने इन्द्र को दो श्राप दिये– 1. तुम्हारा राज्य सदा अस्थिर रहेगा।, 2. तुम्हारे शरीर

में एक हजार योनि छिद्र हो जायेंगे। उन्होंने अहिल्या को भी पत्थर की शिला बन जाने का श्राप दिया।

ऋषि–मुनि क श्राप में भी अन्ततः वरदान छिपा रहता है। इन्द्र सभी इन्द्रासन खोने के भय से पीड़ित रहा। सदा ऋषियों का तप भंग करने में लगा रहा। दैत्यों के आक्रमण से भयभीत रहा। भगवान विष्णु के अनेक अवतारों के दर्शन करने का सौभाग्य उसे मिला। जैसे मोहिनी अवतार, वामन अवतार, रामावतार, श्रीकृष्ण अवतार आदि। उसके शरीर के एक हजार छेद बन गये। श्री राम विवाह के समय दूतहा सरकार के दर्शन एक हजार नेत्रों से करने का सौभाग्य उसे मिला। तुलसीदास ने लिखा–

रामहिं चितव सुरेश सुजाना। गौतम श्रापु परम हित माना।। –बालकांड 316.3

अहिल्या को भी श्रीराम के दर्शन प्राप्त होने का सौभाग्य मिला। महर्षि विश्वामित्र के साथ राम–लक्ष्मण जनकपुर जाते हुए मार्ग में महर्षि गौतम के आश्रम में पधारे। शिला रूप अहिल्या का अपनी चरण धूलि स्पर्श कराकर पुनः स्त्री रूप में परिवर्तित कर उसका उद्धार किया।

इस आख्यान से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

(संकेत : 1. हमें कामासक्त हो परस्त्रीगमन से दूर रहना चाहिए। रामायण में विभीक्षण ने भी रावण को यही सीख देते हुए कहा "**परवार ललाट गोसाई। तजहु चौथ के चन्द्र की नाई।**"

2. किसी ऋषि के श्राप को भी कल्याण मानकर शांति से स्वीकार करना चाहिए।

श्रीकृष्ण द्वारा इन्द्र का अभिमान हरण

विष्णु पुराण के पंचम अंश के अध्याय 21 तथा भागवत महापुराण के दसवें स्कन्ध के अध्याय 24–27 में इन्द्र के व्रज पर कोप तथा श्रीकृष्ण द्वारा व्रज की रक्षा कर इन्द्र के अभिमान का मर्दन करने की कथा का वर्णन मिलता है।

व्रजवासी इन्द्र की पूजा करते थे। पांच वर्ष के किशोर श्रीकृष्ण ने इन्द्र की पूजा कर बंद करा कर गोवर्धन गिरिराज की पूजा प्रांरभ करा दी। इन्द्र ने भारी वर्षा की। श्रीकृष्ण ने गिरिराज को अपनी कनिष्टका ऊँगली पर सात दिन तक धारण किया। व्रज तथा व्रजवासियों की रक्षा हुई। इन्द्र श्रीकृष्ण की शरण में आया। सुरभि गौ को साथ लगाया। श्रीकृष्ण का अभिषेक सुरभि गौ के दूध से किया। श्रीकृष्ण को 'गोविन्द' नाम मिला तथा उपेन्द्र पद पर उनको इन्द्र ने स्थापित किया।

इस आख्यान से आप को क्या शिक्षा मिलती है?

(संकेत : अपने से अधिक बलशाली अपने ही अनुज से शत्रुता का कार्य नहीं करना चाहिए। उसके पुरुषार्थ का व्याख्यान करना चाहिए।)

पारिजात हरण

विष्णु पुराण के पाँचों अंश के अध्याय 30 में भस्मासुर वध तथा पारिजात हरण की कथा आती है। भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध (उत्तरार्ध) अध्याय 59 में भी यह कथा मिलती है।

एक दिन बड़े भाई इन्द्र अपने छोटे भाई श्रीकृष्ण (उपेन्द्र) को मिलने द्वारिका पधारे। उन्होंने प्राग्ज्योतिषपुर के राजा राजा भूमिपुत्र नरकासुर के अन्यायों का वर्णन करे हुए

कहा, ''वह देव, असुर, मानव तथा सिद्धों की सुन्दर कन्याओं का अपहरण करके लाया है। उन सबको उसने अपने रनिवास में बंदी बना रखा है। उसने मंदराचल शिखर की मणि पर भी कब्जा कर लिया है। उसने हमारी माता अदिति के दोनों कानों के कुंडल भी छीन लिए है। अब वह मेरे वाहन ऐरावत हाथी को छीनने का इरादा रखता है। इस आततायी के विरूद्ध क्या कार्यवाही करनी है यह आप विचार करें।''

श्रीकृष्ण विहंसे! उन्होंने अपने वाहन गरुड़ का आवाहन किया। अपनी भार्या सत्यभामा (जो भूमि का अवतार थी) के साथ गरूण पर बैठकर प्राग्ज्योतिषपुर जाने के लिए प्रस्थान किया। इन्द्र अपनी राजधानी अमरावती को लौट गये। युद्ध मं नरकासुर मारा गया। 16,100 कन्याओं को उसके बंदी गृह से श्रीकृष्ण ने मुक्त किया। धरती माता ले प्रकट हो देवमाता अदिति के दोनों कानों के कुंडल श्रीकृष्ण को लौटा दिये। श्रीकृष्ण ने भूमि को नरकासुर की संततति की रक्षा करने का आश्वासन दिया। नरकासुर की अपार धन सम्पदा द्वारिका भिजवा दी। वरुण का छत्र तथा मन्दराचल शिखर की मणि श्रीकृष्ण ने गरुड़ वाहन पर चढ़वा दी।

गरुड़ पर सत्यभामा सहित श्रीकृष्ण देवलोक की राजधानी अमरावती गये। श्रीकृष्ण ने वहाँ पहुँचने की सूचना अपना पांचजन्य शंख बजाकर दी। सभी देवता वहाँ श्रीकृष्ण का स्वागत करने एकत्रित हुए। श्रीकृष्ण देवमाता अदिति को मिले तथा उनको उनके कानों के कुंडल लौटा दिये। श्रीकृष्ण तथा सत्यभामा दोनों ने देवमाता अदिति को प्रणाम करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। ''सदा सुखी रहो, सदा युवा बने रहो।''

इन्द्र ने माता अदिति की आज्ञानुसार श्रीकृष्ण का विशेष अतिथि सत्कार किया। परन्तु इन्द्राणी शचि ने सत्यभामा को एक मानव स्त्री समझकर पारिजात पुष्प से उनका स्वागत नहीं किया।

श्रीकृष्ण तथा सत्यभामा ने स्वर्ग के नन्दन उद्यान में भ्रमण किया। वहाँ पारिजात का वृक्ष देखकर सत्यभामा ने उसे प्राप्त करने की अपनी इच्छा श्रीकृष्ण को बताई। श्रीकृष्ण ने उसकी इच्छानुसार पारिजात वृक्ष देवलोक से द्वारिका ले जाने के लिए गरुड़ वाहन पर चढ़ा दिय। नन्दनवन के सुरक्षा स्टॉप ने इसमं बाधा डाली। सत्यभामा ने कहा, ''पारिजात वृक्ष समुद्र मंथन से मिली हुई सम्पत्ति है जो सभी देवताओं के श्रम से मिली थी। अतः यह इन्द्र तथा शचि की निजि सम्पत्ति है जो सभी देवताओं के श्रम से मिली थी। अत5 यह इन्द्र तथा शचि की निजी सम्पत्ति नहीं हो सकती। यह सब देवताओं की संयुक्त सम्पत्ति है। आप जाकर शचि को मेरी बात कह दें। तुम्हारी ताकत हो तो हमें रोक दो। ''मैं जानती हूँ कि तुम देवराज इन्द्र की रानी हो तथा मैं एक मनुष्य हूँ तो भी मैं पारिजात वृक्ष को ले जा रही हूँ।''

यह सुनकर शचि ने अपने पति देवराज इन्द्र को दैविक अस्त्रों से आक्रमण करने के लिए उकसाया। इन्द्र तथा श्रीकृष्ण दोनों भाईयों के बीच भारी युद्ध हुआ। इन्द्र ने अपना वज्र हाथ में ले लिया तथा श्रीकृष्ण ने अपना सुदर्शन चक्र हाथ में ले लिया। गरुड ने ऐरावत पर आक्रमण कर दिया। इन्द्र ने भागने का प्रयास किया। श्रीकृष्ण ने कहा, ''खड़े रहो, भागो मत।'' सत्यभामा ने ताना मारा, ''आप शचि के पति हो। इस प्रकार रण में भागना आपको शोभा नहीं देता।'' शचि अभी पारिजात पुष्पों की माला आपको पहनायेगी। यदि यह बिना पारिजात की माला के आयेगी तो आपका इन्द्र पद नीचा हो जायेगा। आप पारिजात वृक्ष ले जाओ। शचि वे मेरा देवलोक में उचित स्वागत सत्कार नहीं किया। वह बहुत गर्विणी है। मैंने उसका बदला लेने के लिए ही पारिजात वृक्ष लिया।''

यह सुनकर इन्द्र वापस लौट आया। वह सत्यभामा को बोला, ''ओ क्रोधी स्त्री! मैं देव परिवार का वरिष्ट सदस्य हूँ ऐसी तेजाबी बातें न बोलो जिनसे हमारे पारिवारिक सम्बन्धों में दरार पड़े। इससे कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा। श्रीकृष्ण तो संपूर्ण विश्व के स्वामी हैं। मुझे उनसे पराजय स्वीकार करने में ....माता अदिति के ....कोई संकोच नहीं है। उन्हें कोई जीत नहीं सकता।''

श्रीकृष्ण ने इन्द्र से कहा, ''आप देवताओं के राजा थे। हम मरणधर्म मनुष्य हैं। हमने पारिजात वृक्ष लिया उसके लिए हमें क्षमा करें। आप पारिजात वृक्ष व्रज सहित वापस ले जाओ।''

इन्द्र ने कहा, ''ओ श्रीकृष्ण! हम मनुष्य है ऐसा कह कर मुझे भ्रम में न डालो। हम आपके प्रकट स्वरूप को ही जानते हैं, अप्रकट स्वरूप को नहीं। आपने विश्व के कल्याण हेतु मानव रूप में अवतार लिया है। आप पारिजात वृक्ष के कल्याण हेतु मानव रूप में अवतार लिया है। आप पारिजात वृक्ष को द्वारिका ले जाओ। जब आप मृत्युलोक से आयेंगे तब यह पारिजात वृक्ष भी पुनः स्वर्ग में आ जायेगा। हे स्वामी! आपके साथ मैंने जो बुरा बर्ताव किया उसके लिए मुझे क्षमा करें।''

श्रीकृष्ण पारिजात वृक्ष सहित द्वारिका लौट आये।

इस आख्यान से क्या शिक्षा मिलती है?

(संकेत : श्रीकृष्ण विष्णु के अवतार थे। विष्णु तथा इन्द्र दोनों सगे भाई थे। इन्द्र ने नरकासुर वध करने की प्रार्थना श्रीकृष्ण से द्वारिका जाकर की थी। इस उपकार को भुला कर श्रीकृष्ण ने युद्ध करना इन्द्र की कृत्धनता थी। श्रीकृष्ण ने माता अदिति के कुंडल वरुण का छत्र तथा मंदराचल शिखर की मणि लाकर दी तो पारिजात वृक्ष की भेंट स्वेच्छा से देकर श्रीकृष्ण व सत्यभामा का सम्मान इन्द्र व शचि को करना उचित था। दो सगे भाईयों के बीच स्त्रियों के गर्व की टकराहट से युद्ध की स्थिति खड़ी होना ठीक नहीं थी, हमें ऐहसान फरामोशी तथा सत्ता के अहंकार से बचकर परिवार में भाइयों के बीच एकता बनाकर रखनी चाहिए।

इन्द्र द्वारा गुरु द्रोह

त्रिलोकी का राज्य पा कर इन्द्र को घमण्ड हो गया। वे धर्म मर्यादा तथा सदाचार का उल्लंघन करने लगे। देवराज इन्द्र अपनी वैभवशाली सभा में सभी देवताओं के साथ बैठे थे। देवगुरु बृहस्पति वहाँ पधारे। उनको आते देखने के बाद भी इन्द्र ने खड़े होकर गुरु का स्वागत नहीं किया। गुरु ने देखा कि इन्द्र को ऐश्वर्य का मद हो गया है। गुरु जी सत्ता का त्याग कर अपने घर लौट गये। यह देख इन्द्र ने पश्चताप किया परन्तु गुरु तो अन्तर ध्यान हो गये।

दैत्य गुरु शुक्राचार्य को जब इन्द्र तथा गुरु बृहस्पति के बीच अनबन का पता चला तो उन्होंने दैत्यों को देवलोक पर आक्रमण करने को कहा। देवताओं की भारी दुर्दशा हुई। वे ब्रह्मा जी की शरण में गये। उन्होंने विश्वरूप को गुरु बनाने की सलाह दी। विश्वरूप ने गुरु स्वीकार किया। उन्होंने नारायण कवचन का उपदेश दिया।

विश्वरूप में देवताओं तथा असुरों दोनों की आहुति ग्रहण करते देख इन्द्र ने उसका वध कर दिया। विश्वरूप में पिता त्वष्टा ने इन्द्र शत्रु उत्पन्न करने के लिए यज्ञ किया। इससे वृत्रासुर का जन्म हुआ। उसने तीनों लोकों में आतंक मचा दिया। देवता भगवान नारायण की शरण में गये। उन्होंने इन्द्र को दधीचि ऋषि की अस्थियोंसे वज्र

बनाने की सलाह दी। इन्द्र ने वज्र बनाकर वृत्रासुर पर आक्रमण कर दिया।

वृत्रासुर की दैत्य सेना तो भाग गई परन्तु वृत्रासुर नहीं मर सका। उसी पत्नी सती वृन्दा के तप से उसकी रक्षा हुई। इन्द्र की रक्षा नारायण कवचन से हुई। अन्त में इन्द्र ने वज्र से वृत्रासुर का वध किया।

(भागवत महापुराण, स्कन्ध–6, अध्याय 7–12)

इस अध्याय से आपको क्या सीख मिलती है?

(संकेत : सत्ता ऐश्वर्य के मद से दूर रहें। गुरु का अपमान करना व दूसरे युद्ध की हत्या इन्द्र की कुटिलता व क्रूरता बतलाते हैं। इन्द्र ने अपने स्वार्थ के लिए दधीचि मुनि की मृत्यु कराई। नारायण कवच की सुरक्षा का लाभ लिया जबकि गुरु विश्वरूप को मार दिया। गुरु द्रोही की पराजय अवश्य होती है जैसा महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष के वीरों की हुई।)

पौराणिक दृष्टि से देवराज इन्द्र, विषय भोग–विलास रत था। ऐश्वर्य का मद था। गुरु का अपमान करने वाला था। परस्त्रीगामी भी था। स्वार्थी था। ऐहसान फरामोश (कृत्घन) भी था। छोटे भाई के साथ व उसकी पत्नी के साथ परिवर के बड़े की तरह व्यवहार कुशल नहीं था।

रामायण में इन्द्र का वर्णन एक स्वार्थी देवता के रूप में हुआ है। माता सरस्वती से प्रार्थना करके मंथरा की बुद्धि बिगाड़ कर राम का वनवास कराया। राजतिलक रूकवा दिया। जब भरत वन में जा रहे थे श्रीराम से मिलने तो गुरु बृहस्पति से प्रार्थना की कि राम–भरत न मिल सकें। ऐसा कोई उपाय कीजिए। गुरु ने डांट दिया कि भक्त का अहित न सोचो वरना राम के कोप भाजन बन जाओगे। चित्रकूट आये अयोध्यावासियों तथा जनकपुर वासियों में उचार पैदा कर दिया।

लंका युद्ध में भी अन्तिम दौर में अपने सारथि मातलि के साथ अपना रथ भेजा। विजय के बाद श्रीराम की स्तुति की। श्रीराम के कहने पर वानर–भालुओं पर अमृत वर्षा कर उनको पुनः जीवित कर दिया। राम के विवाह में बरात देखने इन्द्र आया था। राम का राज्याभिषेक हुआ तब भी इन्द्र प्रार्थना करने आये थे।

जब भरत व राम न मिल सकें ऐसा उपाय करने को इन्द्र ने गुरु बृहस्पति को कहा तो गुरु बोले–

बचन सुनत सुर गुरु मुसकाने। सहस नयन बिनु लोचन जाने।।
मायापति सेवक सन माया। ताते उलटि परई सुर राया।।

(अयोध्याकांड 217.1)

देवगुरु बृहस्पति ने मुस्करा कर कहा कि एक हजार नेत्र होकर तुम अंधे हो। मायापति के सवेक पर माया कीजिएंगे तो वह उल्टी पड़ जायेगी।

इन्द्र तथा देवताओं में जब चित्रकूट में भय, उपाट फैलाया तथा तुलसी ने लिखा–

सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुंपन्थ कुठाहु।
रचि प्रपंच माया प्रबल भय, भ्रम, अरति उछाहु।।

(अयोध्या चौ0 1295)

स्वार्थी देवताओं ने कुठोर पर खोटी सलाह करके माया का प्रपंच खड़ा किया। भय, भ्रम, अप्रेम तथा उच्चारन फैला दिया।

'करि कुचालि सोचत सुर राजू।''
ऐसी बुरी चाल चलकर इन्द्र सोचने लगे।

जो भ्रम, भय, उचाट इन्द्र ने चित्रकूट में फैलाया उसकी कड़ी निंदा करते हुए तुलसी ने लिखा–

''मघवा महा महीन मुए मारि मंगल चाहत। (अयोध्या कांड 301)

महा नीचइन्द्र मरे हुओं को मार कर मंगल चाहता है। अमर कुचाल की इन्द्र सीमा है।

वेदों में विशेषतः ऋग्वेद में इन्द्र को मुख्य देवता मान कर इन्द्र की स्तुति की गई है। वर्षा, तूफान, आकाश में बादल व बिजली–गरजने तथा युद्ध का देवता इन्द्र है। इसका मुख्य आयुध वज्र है जबकि अन्य दिव्यास्त्र जैसे पर्जन्यास्त्र का भी वह स्वामी है। इन्द्र की कृपा के बिना संसार सूना है। जल बिना धरती पर जीवन असंभव है। इन्द्र वर्षा जल निःशुल्क देता है तथा सबको समान रूप से उपलब्ध है। अतः यह देवता कहलाता है।

वैसे इन्द्र के मंत्र, 108 नाम तथा 1000 नाम उपलब्ध हैं। मनुष्य के हाथों का देवता इन्द्र को माना गया है। इन्द्र की आयु एक मन्वन्तर तक सीमित है। एक मत यह भी है कि इन्द्र व्यक्ति का नाम न होकर पद का नाम है। प्रत्येक मन्वन्तर का एक पृथक इन्द्र होता है। वर्तमान मन्वतर में ....इन्द्र है। इन्द्र शब्द का संधि विच्छेद करें तो इन्द्र का अर्थ बूंद है। वर्षा की बूंदों से इन्द्र का संबंध है।

2.6 इन्द्र, मरुत, विष्णु, सूर्य आदि का आपसी सम्बन्ध

इन्द्र भगवान विष्णु का सगा बड़ा भाई है। जहाँ इन्द्र दैत्यों के आक्रमणों को संभाल नहीं पाता तब विष्णु उसकी सहायता करते हैं। समुद्र मंथन में अमृत देवों को ही मिले, दानवों को नहीं इसके लिए विष्णु ने मोहिनी अवतार लिया। जब मरुत इन्द्र के सहायक हैं। इनका वेग वर्षा का लाने तथा हटाने का कार्य करता है। सूर्य यदि ग्रीष्म में जल न सोखें तथा मरुत सहायता न करे तो बादल कैसे बनें? सूर्य जितना जल सोखते हैं उसे अनेक गुना करके इन्द्र वर्षा के रूप में धरती को लौटा देते हैं। इस प्रकार से सभी देवता एक दूसरे के पूरक हैं।

2.7 मरुत व इन्द्र की विभूतियाँ तथा उनसे सीख

मरुत इन्द्र के सहायक हैं। तीव्र वेग व फल या शक्ति के धनी हैं। इन्द्र वर्षा, बादल, गर्जना, बिजली की शक्तियों से सम्पन्न हैं। इनसे निम्नलिखित सीख/शिक्षा मिलती है:

1. एक शक्ति 49 भागों में बंटने से इन्द्र का नाश न करके उसका सहायक बनना पड़ा। प्रबल शत्रु का सामना करने के लिए शक्ति को एक जुट रखो, विभाजित नहीं।
2. उच्च पदस्थ को सत्ता तथा ऐश्वर्य के मद से बचना चाहिए। गुरु का आदर करे व उनकी आज्ञा का पालन करे। परस्त्री गामी नहीं होना चाहिए। परिवार में अच्छे सम्बन्ध रखने चाहिए।

3. देवों की तरह एकता से रहना चाहिए। परस्पर सहयोग करना चाहिए।
4. देवों की तरह प्राकृतिक संसाधन सेवा मानव के लिए निःशुल्क दें तथ्झा समसान वितरण करें।
5. जितना ग्रहण करें उसका अनेक गुना करके संसार को दें।
6. अपना चरित्र ऐसा रखें कि लोग पूजा करें या आदर दें।
7. इन्द्र की तरह पराजय के बाद भी पुनः विजय के लिए पुरूषार्थ करें।

2.8 सारांश

49 मरुत कश्यप–दिति की संतान हैं। ये इन्द्र के सहायक हैं। उप–वायु रूप हैं। प्रचंड वेग शक्ति वाले हैं। सत्त्व व तेज के धनी हैं। इन्द्र द्वादश आदित्यों में एक है। ये कश्यप–अदिति की सन्तान हैं। सत्ता व ऐश्वर्य, शौर्य के स्वामी हैं। वज्र धारक हैं। ऐरावत हाथी की सवारी करते हैं। ऋग्वेद में मुख्य देवता हैं। परन्तु पुराणों में टीकात्मक आचरण है। वैदिक देवताओं का राजा हैं। अलकापुरी में इनकी राजधानी है। देवगुरु बृहस्पति इनके गुरु है। शचि पत्नी है। जयंत पुत्र है। विष्णु इनके संकटमोचन व परामर्श दाता हैं। इन्द्र को सत्ता जाने का भय सदा सताता रहता है। रंभा–उर्वशी अप्सरायें व कामदेव तपस्या भंग कर इन्द्रासन की रक्षा करते हैं। मरुत व इन्द्र की भी आयु सीमित होती है। वेदों तथा पुराणों के बीच मतभेद पाया जाता है।

2.9 पारिभाषिक शब्दावली

1. देवता, 2. मरुत, 3. इन्द्र, 4. पौराणिक, 5. वैदिक, 6. आदित्य।

2.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. जयदयाल गोयन्दका, श्रीमद्भगवद् गीता, तत्त्व विवेचनी टीका, गीता प्रेस, गोरखपुर
2. श्रीमद्भागवत महापुराण, हिन्दी टीका सहित, वाल्यूम–2, गीता प्रेस, गोरखपुर
3. विष्णु पुराण, हिन्दी टीका, गीता प्रेस, गोरखपुर
4. वायु पुराण, हिन्दी टीका, गीता प्रेस, गोरखपुर

बोध प्रश्न

1. 49 मरुतों के माता–पिता व जन्म की कथा बतायें। वे किसके सहायक बने? उनकी विभूति क्या है?
2. मरुतों का वैज्ञानिक परिचय दें।
3. इन्द्र व परिवार का परिचय दें।
4. इन्द्र की विभूति का वर्णन करें।